वन उत्पादकता संस्थान

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून)

"फलेमेंजिया सेमियालता पौधरोपण तकनीक एवं लाह पालन"

दिनांक 18.09.2022

वन उत्पादकता संस्थान,रांची के निदेशक डा.नितिन कुलकर्णी के निर्देश एवं श्रीमती अंजना सुचिता तिर्की भा.व.सेवा के मार्गदर्शन में आजादी का अमृत महोत्सव तथा वन विज्ञान केंद्र झारखण्ड के अंतर्गत दिनांक 18.09.2022 को संस्थान के एक दल श्री एस.एन.वैद्या,श्री बी.डी.पंडित,एवं श्री करम सिह मुंडा द्वारा ग्राम उकडीमारी,तोरपा में "फलेमेंजिया सेमियालता पौधरोपण तकनीक एवं लाह पालन" विषय पर प्रशिक्षण का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता पूर्व मुखिया श्री एतवा भगत की । श्री करम सिह मुंडा के द्वारा संस्थान एवं कार्यक्रम परिचय के उपरांत श्री एतवा भगत ने लाह की खेती को जीवन यापन का आधार बतया तथा उकडीमारी पंचायत में पूर्व लाह की खेती होने की बात कही। उन्होने कहा कि यह गांव कुसुम एवं बेर पर लाह की खेती लेता रहा है, फलेमेंजिया सेमियालता के पौधे मिल जाने से लगभग सभी किसान लाह की खेती से जुड जायेंगे। ग्रामीणो से आग्रह किया कि खुद के प्रयास से फलेमेंजिया पौधा लगायें एवं लाह की खेती कर अपने आजीविका में सुधार लायें। श्री सुनील शर्मा, गैर सरकारी संगठन के नेतृत्व में श्री राजेश गोप के जमीन में संस्थान के अधिकारियों,किसानों तथा जन प्रतिनिधि द्वारा फलेमेंजिया सेमियालता पौध रोपण किया गया।

दूसरे सत्र में फलेमेंजिया सेमियालता पर लाह कीट पालन विषय पर प्रशिक्षण देते हुए श्री एस.एन.वैद्य,मु.त.अ. ने बीज एव कटींग से पौध तैयार करने की तकनीक को विस्तृत से बताया। पौध रोपण तकनीक को बताते हुए उन्होने गढे का आकार,गढा करने का समय,प्रति हेकटर गढों की संख्या तथा पौध रोपण उपरांत पौध प्रबंधन को विस्तार से समझाया । उन्होने सघन पौधरोपण के लिए 10000 पौधे की आवश्यक्ता बताया। श्री बी.डी. पंडित,तकनीकी अधिकारी ने फलेमेंजिया सेमियालता पर कुसमी लाह उत्पादन तकनीक को विस्तार से बताया। उन्होने बताया कि फलेमेंजिया सेमियालता पर जेठ्वी लाह फसल लेना कठिन होता है। ऐसे स्थिति में काफी पानी की जरुरत पडती है। अत: बरसाती फसल लेना उत्तम होता है। लाह बीज/बीहन की उपलब्धता बरकरार रखने के लिए उस क्षेत्र में कुसुम पेड का होना आवश्यक है। फरवरी में पौधो को कलम कर जुलाई मे लाह बीज/बीहन रोपण किया जाता है पुन: जनवरी-फरवरी में फसल कटाई एवं कलम साथ-साथ किया जाता है। इस तरह एक बार पौध रोपण कर देने के बाद 8-10 साल तक लगातार फसल लिया जा सकता है।

आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम की झलकियां

परिचर्चा सत्र में कई किसानों ने लाह की खेती एवं फलेमेंजिया पर लाह कीट पालन सम्बंधी प्रश्न पूछे जिसका समाधान संस्थान के दल द्वारा किया गया। श्री विजय साव, श्री अजीत गोप, श्री राजेश गोप, श्री सुजीत लकडा, श्री अमृत लकडा आदि ने फलेमेंजिया सेमियालता पर लाह कीट पालन सम्बंधित प्रश्न एवं अन्य खेती की तुलना में लाह की खेती से आमदनी के विषय में तुलनात्मक प्रश्नों का संतोष जनक उत्तर श्री बि.डी. पंडित,त.अ. ने दिया। दीन दयाल उपाध्याय ग्राम स्वालम्बन योजना के श्री सुनील कुमार शर्मा ने ग्रामीणों से सेमियालता पौधा लगा कर उस पर लाह की खेती करने का आग्रह किया। प्रेरक दीदी देवंती देवी ने ग्रामिणों के उत्साह पूर्वक भाग लेने के लिए धन्यवाद किया तथा वन उत्पादकता संस्थान, रांची के रोजगारवर्धक प्रशिक्षण के लिए संस्थान के निदेशक का धन्य वाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम की सफलता में संस्थान के श्री एस. एन.वैद्य,श्री बी.डी. पंडित,एवं श्री करम सिह मुण्डा का सराह नीय योगदान रहा।

वन उत्पादकता संस्थान, रांची